|  |
| --- |
| 09. November 2025 |
| **Weihetag der Lateranbasilika Fest** |
| Erste Lesung: Ez 47,1-2.8-9.12; Zweite Lesung:1 Kor 3,9c-11.16-17; Evangelium: Joh 2,13-22 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 478, 1-3 | Ein Haus voll Glorie |
|  | GL 704, 1-3 | Dir, Vater, tönt der Lobgesang |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 154 | Kyrie eleison |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 706 | Wir beten an und loben dich |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 46,2-3.5-6.8-9 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 397 | All meine Quellen  |
|  | GL 653, 3 | Selig, die bei dir wohnen, Herr |
|  | oder |  |
|  | GL 144, 1+4-6 | Nun jauchzt dem Herren |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich habe dieses Haus erwählt und geheiligt,* |
|  | *damit mein Name hier sei auf ewig.* |
|  |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 477, 1-3 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  | GL 189 | Siehe, wir kommen + |
|  |  | „Gepriesen bist du ...“ |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 208 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 414 | Herr, unser Herr, wie bist du zugegen |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 479 | Eine große Stadt ersteht |